## सच्ची आत्मिक वृत्ति से आएगी वैश्विक शांति : राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी

आबू पर्वत, ज्ञानसरोवर,११ जुलाई २०१५। आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ के न्यायविद् एवं अधिवक्ता प्रभाग द्वारा एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन दीप प्रज्वलित करके संपन्न हुआ। आज के सम्मेलन का विषय था, शांति एवं मानवता के वैश्वीकरण के लिये न्यायपालिका का आध्यात्मिक नजरिया।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी ने अपना आर्शीवचन इन शब्दों में दिया। आपने कहा कि आप सभी इस आध्यात्मिक स्थान पर आए हैं जहाँ आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती है। इसके आधार पर ही हमारे जीवन में भी सुख और शांति आती है। कभी भारत सोने की चिड़ियाँ माना जाता था। ऐसा तब था जब वहाँ के लोग आध्यात्मिक शक्तियों से संपन्न थे। हमारा शरीर आत्मा की शक्तियों से ही संचालित होता है। हम मानते हैं कि हम सभी एक परमात्मा पिता की संतान हैं। अगर सही में हमारा दृष्टिकोण वैसा ही बना रहे तो विश्व में आसानी से शांति हो जाएगी। अपने कर्मों को श्रेष्ठ कर्म बनाने के लिये आत्मा का भान तो होना ही चाहिये।

न्यायविद् एवं अधिवक्ता प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी रमेश शाह जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की एवं आज के सम्मेलन के विचारों को सार रूप में इस प्रकार से प्रकट किया। आपने कहा कि भारत जरूर फिर से सोने की चिड़िया बनेगा क्योंकि संसार का चक्र बार बार दुहाराया जाता है। अतः फिर से स्वर्ग आना ही है। दुनियाँ शांति की प्राप्ति के लिये भारत की ओर और यहाँ की आध्यात्मिकता की ओर निहार रहा है। मानवीय मूल्यों को अपना कर ही हम जीवन में शांति ला पाएंगे।आप यहाँ से शांति दूत बन कर जाएं।आपके सहयोग से यह सपना सफल होगा। हमारा यह परम विश्वास है।

न्याय मूर्ति आर पी नागरथ, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्मेलन को संबोधित किया। आपने कहा कि ८४ वर्षीय भाई बी एल माहेश्वरी जी की सेवाओं को देखते हुए और उनके उत्साह एवं गर्मजोशी के लिये मैं उनको एक युवा राजयोगी मानता हूँ। न्याय प्रणाली से संबंधित अपने ३८ वर्षो के इस जीवन के अनुभवों के बाद आज मैं ऐसा महसूस कर रहा हूँ कि हमारी न्याय प्रणाली आध्यात्मिक पहलू को मिस कर रही है। न्याय प्रणाली में देरी एक बड़ी समस्या है। हमारे पास अनेक उत्तम लोग हैं जो न्यायापालिका का भला कर सकते हैं मगर इसमें आध्यात्मिक पहलू के समावेश की बड़ी जरूरत है।

पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व न्याय मूर्ति प्रीतम पाल जी ने अपनी शुभकामनाएं दीं और कहा कि शांति,मानवता एवं आध्यात्मिकता के लिये न्यायपालिका को मूल्यों को अपनाना चाहिये। जीवन से आध्यात्मिकता के निकलने पर हमारा अपना स्तर नीचे गिरता चला गया। मैकाले की शिक्षा पद्धति ने हमारा बुरा किया है।हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद का मानना था कि जब तक हमारी विधायिका के प्रतिनिधि चरित्रवान नहीं होंगे तब तक संविधान कैसा भी क्यों न हो , सुधार नहीं हो सकता। पहले अच्छा इंसान बनना जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज आध्यात्मिकता की एक फैकट्री है जहाँ से अच्छे इंसान निकलते हैं। न्याय देने के क्रम में हमें आध्यात्मिकता की भावना से भरपूर होना चाहिये। मैं इस संस्थान का बड़ा आभारी हूँ।

पूर्व मुख्य आयुक्त आयकर विभाग, कृष्ण कुमार बालिया जी ने कहा कि यहाँ से प्राप्त आध्यात्मिक शिक्षाओं को लेकर हम वापस जाएंगे और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाएंगे। शांति और मानवता एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना अन्य संभव नहीं है। आज शांति लुप्त हो गई है समाज से। उनको वापस लाने की क्या पद्धति हो सकती है? आध्यात्मिक शक्तियों के आधार पर हम अपने जीवन में शांति ला पाएंगे और इससे मानवता भी आएगी। हमें यह महसूस करना है कि यह संसार शरीरों का नहीं बल्कि आत्माओं का घर है। हम सभी परमात्मा की संतान हैं। मन में इस भावना के आने से ही मानवता आने लगेगी। दूसरे, राजयोग हमें मदद करेगा। राजयोग की शिक्षा से विश्व में शांति आएगी।

न्यायविद् एवं अधिवक्ता प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.बी .एल .माहेश्वरी ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मुझे परमात्मा के घर से सेवा मिलती है तो मैं सबसे पहले वही करता हूँ। बाकी बातें उन्हीं पर छोड़ देता हूँ। आपने कहा कि सम्मेलन का लक्ष्य बड़ा महान है। आध्यात्मिकता को अपनाने से इस लक्ष्य की प्राप्ति आसान हो जाएगी। भारतीय संविधान की प्रस्तावना की चर्चा करते हुए आपने कहा कि अगर ये सारे कर्तव्य और अधिकार हमें प्राप्त होते रहेंगे तो भारत ही नहीं विश्व में शांति स्थापित हो जाएगी। आपने अनेक दृष्टांत सुनाया और स्पष्ट किया आपसी सहकार से विश्व की बड़ी से बड़ी समस्या का भी समाधान निकाला जा सकता है।

गौहाटी जिला एवं सत्र न्यायालय के न्याय मूर्ति विनय शर्मा ने अपनी शुभकामनाएं इन शब्दों में दीं। आपने कहा कि हमारे संविधान की प्रस्तावन की शुरुआत होती है हम शब्द के साथ। हमें करना है। मुझे करना है , ऐसा नहीं है। हम सभी को तैयारी करनी है कि हम नियमों का पालन कर सकें। हमनें मानवता को फांसी पर लटका दिया है तभी हम गंदे शब्दों का प्रयोग करते हैं। ब्रह्माकुमारीज इन दो शब्दों

को हमेशा प्रयोग में लाती हैं , भाई और बहन। व्यक्ति कोई भी हो, बड़ा या छोटा। इनके लिये भाई या बहन ही है। यह प्रमाण है कि ये तीसरे नेत्रों से दुनियाँ को देखती हैं। तीसरा नेत्र है आत्मिक नेत्र। हम सभी को भी इसका अभ्यास करना चाहिये।

न्यायविद् एवं अधिवक्ता प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्रह्माकुमारी लता बहन ने कार्यक्रम का संचालन किया। इसी प्रभाग के कार्यकारी सदस्य ब्रह्माकुमार ललित ने धन्यावाद ज्ञापन किया। इसके पूर्व राजयोगिनी पुष्पा बहन ने योगाभ्यास करवाया और सभी का शांति की गहन अनुभूति करवाई। (रपट : बी के गिरीश, ज्ञानसरोवर )